1

भारत में गेहुं ,जौ की खेती के साथ भाषा व संस्कृति का आगमन व फैलाव

लेखक–कृष्ण चन्द्र दहिया 08901035084

Krishna.chander2010@gmail.com

भोजन सग्रांहक मानव व भारत मे उनकी बोली के शब्द––

गेहू व जौ कि खेती शुरू होने से पहले मेडेटेरियन क्षेत्र व इरान के जाग्रोस पहाड तक घुमन्तु मानव गिरीयां व अन्न का संग्राहक बना था। होमो सैपियन मानव को उसके हाथ के अंगुठे का घुमाव , पकड व अंगुली तथा अंगुठे की पकड बाकि एप्पस से अलग करती है। आदमी अंगुठे और पहली उंगुली से लगातार दाणे चुग सकता है जबकि चिम्पाजीं को ये काम करने क लिये मुटठी भरनी पडेगी। मुटठी ढेर में से भरी जाती है जबकि जंगली अन्न बिखरा हुआ होता है। इसलिये मानव उसे उठा सकता था लेकिन दूसरे एप्पस ऐसा नही कर सकते। इसलिये मानव अन्न संग्राहक भी बन गया। Nostratic Dictionary में एक शब्द नं0 2252 है Saeul यानि ढूंढना। हरियाणा मे गेहू की कटाई होने के बाद बिखरी हुई गेहूं की बालियों को उठाने के लिये शब्द है सिल्ला। जाटो व चर्मकारों में ये आम शब्द है। इसका मतलब है कि ये दोनों जातिया अन्न संग्रहक काल से भी ताल्लुक रखती हैं। उतरी पश्चिमी भारत व पाकिस्तान का चर्मकार का बडा भाग जाट ही है। अन्न संग्राहक काल की बोली के मुझे थोडे से शब्द मिले––"'Herwitz 1966 , Ehrat1995,1999 ने बताया कि हिब्रू भाषा मे दो कांसटेंटों के शब्दों का ताल्लुक पहली बोली से है जो घुमन्तु काल मे थी।––

पहली बोली	अर्थ	जाट बोली	पहली बोली	अर्थ	जाटकी बोली
माई	पानी	मींह	बद	दुर्गन्ध	बदबो
बन	बनाना	बणा/बणाना	दर	गोल घर	डेरा
सित	पहनने का	सूती	,,,,,,,[1]		

ये सभी शब्द हरियाणा की जाट बोली में हैं। हम मींह कहते है बारिस को और आज सूती कहते हैं कपास के पौधे के रेशे से बने कपडे को। आदमी व औरत के गुप्त अंगो पर लेसदार पदार्थ के कारण कीडे मक्खी आदि बैठने का भय रहता था इसलिये उनको किसी पते या पौधे की छाल के रेशों से इन अंगो को ढकना बहुत जरूरी था। सित शब्द इसी रेशे से बने जुगाड का नाम हो सकता है।

Bar Yosef 1998 ने बताया कि खेती की शुरूआत दक्षिणी अन्नाटोलिया के योंगर दरिया से हुई। Bar Yosef & Cohan 1989 बताते हैं कि योंगर दरिया से जोर्डन तक खेती करने वाले समूह बने। अब सवाल ये उठता है कि 6000 बी सी के आसपास जो समूह बिलोचिस्तान मे गेहू व जौं की खेती की टैक्नोलाजी ले गया था और बाद में आये , वे आज कौन हैं?

डेरा गाजी खां को जो बिल्कुल क्वेटा व मेहरगढ के साथ है जहां पहले किसान आये थे। इसलिये मैंने डेरा गाजी खां को पढा। ''''''1891 के सैंसस अनुसार डेरा गाजी खां मे बिलोच 132192 , जाट 116740 , सैयद , पठान ,राजपूत , शेख अरैन , मुगल ,माची अन्य ऐग्रारिरियन समूह 55804 , तरखान , सफाई करने वाले व अन्य छोटी जातियां 22168 जुलाहे , सुनार पूजारी , हिन्दू दूकानदार आदि 76007 थे। बिलोच किसान नहीं होते बल्कि पशूपालक होते हैं''''''''[2] इन सभी जातियों मे केवल अरैन किसान होते है। इनको हरियाणा में माली या सैनी कहा जाता है। दरअसल ये किसान की बजाय बागवान होते हैं। इनमें कुछ समूह फसल की कटाई कर अन्न संग्रह जरूर करते है लेकिन वे किसान नहीं है। जाट के सामने सभी जातियां बिल्कुल छोटी है। माची होते हैं मछली पकडने वाले लेकिन मोची एक टैक्नीकल समूह है जो जूते बनाते थे। हम मुलतान का भी अध्ययन करेंगे क्योंकि ये भी क्वेटा व मेहरगढ के पास है।––सैंसस 1901 अनुसार––

''''''जाति	आबादी	जाति	आबादी	जाति	आबादी	जाति	आबादी
अरैन	23410	अरोडा	88987	बिलोच	24488	ब्राहमण व मुल्ला	5579
सविपर	11182	धोबी	14682	जाट	140315	जुलाहा	27132
खत्री	10877	खोखर	11606	कुम्हार	18827	लुहार	3774
माची	12429	मल्लाह	7745	मोची	24144	नाई	8438
पठान	8251	राजपूत	91516	सैयद	10567	शेख	6826
सुनार	2821	तरखान	17356''''''[3]				

आइने अकबरी अनुसार इनमें सैयद को छोडकर किसी के पास खेती की भूमी नही थी। लेकिन सैयद किसान की बजाय पढाकू व धर्म उपासक जाति होती है। पाकिस्तान की उपरोक्त किताब अनुसार राजपूतों के पास मुलतान में खेती की जमीन ही नहीं थी। जबकि मुलतान सैटलमैंट रिर्पोट 1873–1880 अनुसार मुलतान जिले की कुल कृषि भूमी 1857200 एकड थी और उसमें से जाटों के पास 1030622 एकड भूमी थी। बाकि सरकार ने ले ली व ब्रिटिश कानुनों का फायदा उठाते हुये सूदखोर ने हडप ली। चचनामा इलियट 1–190 अनुसार स्वांदी मे (दक्षिणी पंजाब , सिन्ध व बिलोचीस्तान) किसान केवल जाट हैं। पंजाब में 1881 से 1931 तक के सैंसस रिर्पोट अनुसार सारे पंजाब में जाट अकेले 26–27 प्रतिशत हैं और बाकि 73 प्रतिश में सैंकडों जातिया थी। हालांकि इनमे रोड , यादव , अरैन , राजपूत , सैनी ,आदि कई जातियां किसान थी। लेकिन उनकी संख्या बहुत मामुली थी। राजस्थान के धग्धर– हाकरा–नारा सिस्टम पर या यूं कहे बिकानेर रियासत में कर्नल टाड अनुसार 539250 लोगों में से 3/4 भाग जाटों का था। My Observation on Sind by Captain Postan अनुसार सिन्ध का किसान जाट था। डेविड रोज अपनी किताब लैंड आफ फाइव रिर्वस एण्ड सिन्ध में बताते है कि महाभारत मे जाटिक/जत्रिका का वर्णन है।

Constantini 1983 , Jarriage &Meadow 1982 , Wright 2010 आदि वैज्ञानिक इतिहासकारों अनुसार मेहरगढ में गेहू बोने वाला किसान 7000 बी सी से 5500 बी सी के बीच कहीं आया। ये औसतन काल विद्वानों ने 6000 बी सी का बताया है। दक्षिणी अन्नाटोलिया में गेहूं जौं की खेती शुरू हुई 8000 बी सी के आस पास और ये टैक्नोलोजी ऐलाम/मौजुदा ईरान में 1000 साल बाद पहुंच गई और इसके 1000 साल बाद बिलोचीस्तान पहुंच गई। अमरमैन व कावाली सफरोजा ने इसे वैव आफ एडवांस कहा जिसकी चाल 1.3 कि0 मी0 हर साल थी। बिलोचीस्तान में इन किसानों के आने मे ये चाल कम हो सकती क्योंकि रास्ते मे दस्ते लूड व दस्तें कबीर नाम के दो विशाल रेगिस्तान हैं। इसलिये भारत में ये किसान वाया पूर्वी इरान व अफगानिस्तान ज्यादा आये है और वाया सीस्तान कम आये हैं। ये किसान कौन था? इस बारे में '''Dorrian Fuller बताते हैं कि 6000 बी सी में ऐलामो–द्रविडीयन लोगों द्वारा भारत मे गेहूं पहुचां।'''[4] ये ऐलामो द्रविडीयन शब्द किन लोगों के लिये है , उनकी संस्कृति क्या थी, मैं इस पर भी बताउंगा।

''''Jarriage , Lech Vallier 1993 , Gupta 1979 अनुसार सिन्धू सभ्यता का खास ताल्लुक पूर्वी इरान से था।'''''[5]

B.K.Thapar & Shariff.M अनुसार ''''मेहरगढ का पाषाणकालीन खेती उद्योग पूर्वी इरान की जैटू कल्चर से मिलता है'''[6]

जब ये प्रमाण हैं तो सिन्धू सभ्यता व उससे पहले के भांड व अन्य संस्कृति भी ऐलाम से मिलनी चाहिये। मैंने देखा है कम्पुयटर पर कि मेहरगढ की एक कब्र में छोटे बडे कई साईज के भांड थें। लेकिन वैदिक कालीन संस्कृत में भांडो के लिये केवल एक नाम है–कुम्भ। उतर पश्चिमी भारतिय उपमहाद्वीप की सबसे बडी बोली जाटकी में इन भांडो के कई नाम हैं जैसे कुल्हड , बरोली ,मंहगी ,हांडी ,माट ,पंहंडा , कढावणी , बिलोवणी , माप और गोल। इन सबके साईज अलग अलग हैं। भारत से लेकर पाकिस्तान की जाट बैल्टों में अक्सर लाल पीले रंग के भांडो पर काली सफेद ज्यामैटरीकल लाईनिंग या डिजायनिंग होती है तो ऐलाम मे भी ऐसा ही था। Dyson 1991 ,Voigt & Dyson 1992 , Motteney 1995 अनुसार कार्बन डेंटिग से पता लगता है कि इरान में बाद के बर्तन सफेद है लेकिन पहले इरान के पूर्व में गुडगावां से लेकर पश्चिमी इरान के काजविन तक लालरंग के भांडे सारे इरान में थे जो पूरी तरह अलग हैं। इन भांडो पर काली सफेद लकीरें हैं।

अन्नाटोलिया के पहले किसानों में एक ऐसी संस्कृति थी जो आज की तारीख में सारे उस क्षेत्र में है जहां सिन्धू सभ्यता थी। लेकिन केवल वहीं भारी मात्रा में है जहां जाटों की बहुलता है। आज की तारीख में जाटों में जन्म , मृत्यु व शादी पर लोग इकठा होकर खाना खाते हैं। जाटनी कनागत मनाती है जिसे श्राद भी कहा जाता है। उतर पश्चिमी भारत के हर धर्म में भंडारे की सोच को शामिल किया गया है जैसे सिद्ध , नाथ में भंडारा सिस्टम है , सिख धर्म में संगत व पंगत का सिद्धान्त है और पाकिस्तान के पंजाब , सिन्ध व बिलोचीसतान में सूफीवादी पीरों की दरगाहों पर भंडारे होते हैं। मेरे गांव में बारिस ना होने पर बारिस

करवाने के लिये भंडारा करने की रिवाज है जिसमें कोई उंच नीच नही होती। मैं जब छोटा था तब पेट पर बेल्ला लगा कर भागा भागा जाता था और शक्कर चावल खाता था। हमारे गांव के लोग कहते थे कि अब तो बारिस होनी ही होनी है।

सहभोज की ये रिवाज अन्नाटोलिया मे व लेंवाटस मे पहले किसानों मे थी। ''''Dieter &Haglan 2001 , Helwig 2003, Bragg 2003 अनुसार आर्केलोजिस्टों का पिछले 10 सालों से ध्याान सामूहिक भोज पर गया है। Bar Yousef अनुसार नेटिवहगदूद की साइट से दर्जनों बर्तन मिले ––मकान बनाते वक्त भी सहभोज दिया जाता था। Habbermass अनुसार भंडारे का मतलब था सामाजिक सम्बनध बनाना। सामूहिक सहभोज शादी व सामाजिक उतराधिकारिता बनाने के लिये भी था। Cauvin 2000 , Kenyon 1957 , Kuijt 1996 अनुसार मृतक संस्कार का मतलब पूर्वज पूजा से था। Garfinkel 2003 अनुसार मृतक संस्कार का मतलब वंश की निरंतरता से भी था। प्रांचीन किसान अपने को सामाजिक रिवाजों से इकठा करते थे। चागवान 1993 अनुसार हालन सामी में भी आपसी सहयेग बढाने के लिये भंडारे की रिवाज थी। Hodder अनुसार भंडारे , नाच या मृत्यु पर इकठा होना समाज की पहचान भी थी।''''[7]

ये रिवाजें सिन्धू नदी पर किसान लाये। कुछ जातियां देने वाले दिन पैदा नहीं होती लेकिन कुछ जातियां पैदा ही देने वाले दिन होती है उनमे गेहू , जौं , बाजरा बोने वाला जाट है और उसमे ये उपरोक्त सारी संस्कृति आज की तारीख में भी हैं 8–9 –10 हजार साल बीत जाने के बाद भी । तो क्या उन पहले किसान यानि Agricultural and Agrrian लोगों के एक समूह का नाम जाट ही था। कुछ लोग कहते है कि जाट तो 400–500 साल पुराने है। एक वर्ग कहता है कि चचनामे मे इनका जिक्र है इसलिये ये साका हैं क्योंकि कर्नल टाड ने यही कहा है। यानि उस किसान समूह पर जिसके सरप्लस गेहूं पर सिन्धू सभ्यता उठी और वे मोहन जोदडो व हडप्पा के शहरी उस गेहू को खाते थे उसे कौन बोता था? इस पर काम नहीं हुआ। कुछ ने कहा कि वे तमीलनाडू के द्रविड थे। मैं पूछता हूं तमीलो को तो आज भी गेहूं बोना खाना नही आता। इसलिये वे कैसे सिन्धू सभ्यता के गेहूं उत्पादक हुये? कुछ ने कहा की बिलोचीस्तान के ब्रोही भी तमील बोलते हैं और ये ही सिन्धू सभ्यता के किसान थे। सैंसस आफ इंडिया 1901 जो लोगों की अपनी गवाही है और सरकारी दस्तावेज है , के अनुसार ''''ब्रोही लोग बिलोचीसतान के उतर पूर्व में हैं। ये काकेसीयन टाईप लोग है लेकिन दक्षिण भारतियों से मिलते हैं। उनके पडोस में जाट व बिलोच हैं। कुछ विद्वान इनको आर्यन समूह मानता है और कुछ उनको मध्य प्रदेश के कोली समूह के मानते है और कुछ द्रविड समूह के मानते हैं। डा0 कोल्डवैल उनकी बोली में सिन्धी , पंजाबी व तमील के तत्व मानते हैं। बिलोचीस्तान में जाटकी बोली काफी बोली जाती है जिसे सरायकी भी कहते हैं। ये जाट किसानों की गवांरू बोली हैं और इसमें खेती के ज्यादा शब्द हैं। इसका नाम पश्चिमी पंजाबी और लहंडा भी है। खैत्रानी व पाकिस्तान के पख्तुनवा की इन्दको बोली भी इसी जाट बोली की शाखा है। मेंगल , बिजेंजो और जहरी तीन बडे कबिले हैं बिलोचीस्तान में। इनको जगदल भी कहते हैं और जाट भी कहते हैं। ये ब्रोहियों से ज्यादा समझदार हैं।'''[8],

खेती एक बहुत टैक्नीकल काम है जिसमे समझदारी की काफी जरूरत होती है। अगर 1901 में ब्रोही समझदार नहीं थे तो इस बात की कोई सम्भावना नहीं कि 6–7 हजार साल पहले वे किसान थे। लेकिन ये सत्य है कि जाट और ये ब्रोही बिलोचीस्तान में भी साथ हैं , पहले भी साथ थे और इरान में भी साथ थे।

''''ऋगवेद 1–173–2 पर शब्द है गुर्त और इसका अर्थ है उद्यम। और 6–63–4 पर गुर्त मना जिसका अर्थ है उद्यम करने वाले सदा से। और 6–64–4 पर स्व गुर्तो यानि स्वय का उद्योग वाले होते हुये।'''''[9]

इन अर्थों से मतलब निकलता है कि सभी दस्तकार व किसान जातियों को गुर्त कहा गया। ये परिभाषा ठीक है और दस्तकार जातियों से जाट का हुक्का , पानी व रोटी का सम्बन्ध भी है। लेकिन यही गुर्त शब्द ऐलाम मे भी था। ''''प्रोटो इरानी का G शब्द प्रसियन , नई इरानी , कुर्दिश गोरानी , कुर्दिश जाजानी और पूर्वी इरान में कैस्पीयन समुन्द्र के पास Z हो जाता है।''''[10] '''''प्रोटो इंडो युरोपीयन का 4100 बी सी मे K ,G ,GH शब्द प्रोटो इरानी मे क्रमशः C , J , JH बदल गया था। ''''[11] इसका मतलब है कि गुर्त या गुर्ट शब्द ज्रर्ट/जट/जाट ही था।

History of Afganistan by Vitaly Bashkikov अनुसार ऐलाम ,सिन्धू व व पूर्वी इरान की बोली प्रोटो द्रविडयन है। Herodotus vii-12 अनुसार ऐलाम में निग्रोइड भी थे। Ancient Iraq by G.Roux अनुसार 2300 बी सी में आज के हमादान में गुटियन थे। History of Persia by Percy Skykes अनुसार ऐलाम की भाषा को ही ऐलामाइट कहा जाता है। ये इरान की सबसे प्राचीन बोली है। Heritage of Persia by R.N.Fyre अनुसार गुटी , ऐलामाईट और लल एक ही समूह था। Persia An Archaeological Guide by Sylvia A Mathison अनुसार ऐलाम से एक पत्थर की मिली प्लेट पर बीज , पते और फूल रेखांकित है। पत्थर की इस प्लेट का काल 5500 बी सी का है लेकिन ताम्बे की ऐसी ही प्लेट का काल 2700 बी सी का है।

आज की तारीख मे जाटणी दे उठणे त्यौहार पर दीये के आगे गेहूं के बीज रखती हैं और गेरू से फूल पते बनाती हैं। धर के सभी पशूओं के खुर के व परिवार के सदस्यों के पैरों के निशान बनाती है।

Heritage of Persia by R.N.Fyre अनुसार सूसा के लोगों को किसाण भी कहा जाता था।

'''''Edem Lease अनुसार शेमाहारा की मिटटी की प्लेटो पर Guti/Kuti/Quti शब्द है।––Curse of Agade अनुसार सुमेरियन लेखों में गुटियन को दुश्मन , हमलावर , सांप , बिच्छू व कानुन ना मानने वाला कहा है। Cogni, Roma 1969 , Lambert अनुसार सुमेरियन महाकाव्य ईरा व ईसम में गुटियन को भिडोक कहा है।––Diakonoff अनुसार गुटियन का राज करने का ढंग अलग था। उनके कबिलों की सभा अपना सरदार बनाती थी।–गुटियन राजाओं को सुमेर में लुगाल कहा जाता था।–गुटियन का राजा नहीं होता था बल्कि वे अपने कबिलों के प्रधान चुनते थे।'''''[12] जाटों में आज की तारीख में भी

लोग शब्द आमतौर पर बोला जाता है। यानि ऋगवेद के गुर्त ही ऐलाम मे गुटी थे और ये सब सुमेरियन रिकार्डो में वर्णीत है। कुछ और इतिहास कार लिखते हैं कि ''''इस प्रकार गुटीयन परिवारों का राजा नहीं होता था।बल्कि उनका दर्जा समान होता थां मेसोपोटामियन गुटियन प्रधानों को Kan कहते थे।''''[13] महर्षि पाणिनी उनको गण लिखते हैं। ''''आचार्य शकटायन का वर्णन पाणिनी ने तीन बार किया है। शाकटायन का वर्णन वाजसनेयिप्रातीशाख्य और ऋक्प्रातीशाक्य में होने के कारण वे महाभारत से पूर्व काल के हो जाते हैं। शाकटयन का वर्णन निरूक्त 1/12 पर है और महाभाष्य मे 3/3/1 पर है। यही महर्षि शाकटयन 3/4/145 पर यौधादि कई गणों का वर्णन करते हैं।''''[14] Iranica.com अनुसार पूर्वी इरान से मेसोपोटामिया तक सभी कबिले गुटी थे।

मैं इसका ये अर्थ लगाता हूं कि सिनधू सभ्यता काल में किसानों के अपने गणराज्य थे और व्यापारियों की अपनी गिल्ड थी। बाबा जी का अपना तन्त्र था। लेकिन अब हम वापिस उसी विषय पर आते हैं। ''''मेसोपोटामिया में गुटियों के 21 राजा हुये परन्तु हमले के वक्त उनका कोई राजा नहीं था। उन्होंने मेसोपोटामियन के मन्दिरों को लूटा और उनको तबाह कर दिया।।''''[15] इस प्रकार गुटियन का लिखित इतिहास है और उनकी आदतें भी जाटों से मिलती है और पंचायत सिस्टम भी वही है। ये इरान से सुमेर व सिनधू की तरफ फैले और ये फैलाव ताम्र युग से पहले ही शुरू हो गया था। कारण था आबादी बढने के कारण खेती की भूमी की तलाश। लेकिन जिस तरह जट व जाट दोनों शब्द हैं उसी प्रकार ये ताम्रकालीन सभ्यता ऐलाम में भी था।

<u>सिन्धू सभ्यता क्षेत्र में जाट शब्द कहां से आया</u> ———भारत की किसी बोली मे जट व जाट शब्द के मूल नहीं हैं। लेकिन इसके मूल जाटकी बोली में हैं।

Edward & Gadd अनुसार ''''जब मेसोपोटामिया के अख्खड राजा नरामसिन ने ऐलामी/इरानी राजा हेता को हराया तब लिखित रूप से एक सन्धि हुई। इसमें एक दूसरे पर हमला ना करने व मदद के लिये जिन देवियों की कसम उठाई गई उनमें चौथे व अठारवें स्थान पर जिट और मां जाट देवी की कसम भी उठाई गई थी।''''[16] 'वोल्फेन कालेज के प्रोफेसर दानिशमंद जानकारी देते हैं कि ''''खुजिस्तान के देहअन्ना गांव में ऐक ईंट मिली जिस पर लेख था। मि0 स्टीव ने उसे पढा। इस ईंट पर लिखे लेख में <u>मां जाट</u> से लम्बी उम्र और प्रसन्नतापूर्वक राज करने की मन्नत मांगी गई।''''[17] इरान में ऐलाम की राजधानी सुसा को आज सुस्तर कहते हैं और वहां की सुस्तर युनिवर्सीटी के आर्केलोजीकल विभाग की रिर्सच अनुसार ''''Malidzadeh 2007 , Ravandi 1994 , Aminzadeh 2012 अनुसार 2280 बी सी में देवी सिमुत का दर्जा इन्शुशीनाक के बाद 7 वां और <u>मां जाट</u> का 8 वां दर्जा था। ——प्रोफेसर तागी फजली अनुसार ऐलाम में 3500 बी सी तक जेन्टी समाज था यानि मातृसतात्मक समाज था और 3000 बी सी में जेन्टी समाज से बाहर आया। धर्म के मामले में नाग देवता की आस्था थी। सन 4000 बी सी के भांडो पर नाग देवता के चित्र मिले हैं ''''[18] ''''Lambert भी ऐलाम में मां जाट का वर्णन करता

हैं''''[19] ऐलाम के सूबों के नाम थे ''''अंशन ,सामास्की , जाब शाली ,मरहसी ,सापून ,हार्सी ,सिगरीय , कीमास और जिटानू''''[20] इसका अर्थ है कि मौजुदा भारतिय जाट के नाम की शुरूआत ऐलाम मे मां जाट , जटी देवी से शुरू हुई और उनकी ऐक पूरी स्टेट भी थी। ये प्रमाण लिखित इतिहासिक है। यानि जाट मातृसतात्मक समाज से ही शुरू हो गया था। पूर्वी इरान में आज जो अलबुर्ज पहाड है उसका नाम भी जाट पर था–''''इरानी मानते थे कि हारा बिरी जाटी पहाड धरती के बीच स्थित है। इस पहाड के पास बोरा कुश समुन्दर था और इस समुन्द्र के बीच जीवन वृक्ष था। इरानी मानते थे कि जाटी पहाड से अरदवी सूरा पानी लाती थी और इस समुन्द्र में डालती थी।''''[21] आज इस नदी का नाम औक्सस है , संस्कृत साहित्य में वक्सु है और इस पहाड का नाम अलबुर्ज है और समुन्द्र का नाम कैस्पीयन सागर है। इरान में इंडोयुरोपीयन के आने के बाद जाट को पुरूषतात्मक समाज के रूप में शामिल किया गया। जेन्द ए वेस्ता के हवाले से प्रमाण है ''''पूजारी जोट उपासना में रोटी खाता। दो पूजारी उपासना करते। दूसरा पूजारी रास्पी था जो आग जलाता था और पहला पूजारी जोट उस आग को देखता रहता। उसके पास पानी का बर्तन रखा होता था''''[22] ''''इरान में आध्यात्मिकता को मन्नोग व भौतिकवाद का जटीग कहा जाता था।''''[23] ये सच्चाई है कि जाटणी केवल आस्था निभाती है और जाट कभी धर्म पर बात नहीं करते। जिसकी मर्जी में आया उसका नाम सुलतान , सुलतान सिंह या सुल्तान दीन रख दिया। और जाट को कोई परेशानी नहीं थी।

मैंने पाया कि जाट नाम अन्न उत्पादन काल का नहीं बल्कि अन्न संग्रह काल का है। ''''Popko 1994:98-218 अनुसार दाहा नाम का पहाड अन्नटोलिया में था और जिट हारा व हातुसा के पास था। जिथारिया क्षेत्र में जिट हारा पानी के तूफान की देवी थी''''[24] यानि जाट का मतलब है नाग और जिट नाग देवी थी। जब गेहूं की फसल पक जाती है तब ऐसा मौसम होता है कि नाग जाडे के बाद भूमी की सतह पर काफी घुमती हैं। इसलिये ये अन्न की देवी मान ली गई। बरसात बेहद जरूरी थी अन्नसंग्रहक के लिये क्योंकि इससे धुमन्तु अन्नसंग्राहक का फल ,गिरी मिलते और जगली अन्न पैदा होता। क्योंकि हमेशा बारिस से पहले नाग भूमी पर रेगने लगती हैं असलिये नाग को पानी लाने वाली देवी के रूप में मान्यता मिली। इसी नाग देवी को जिट या जाट कहा गया। जाटों का दूसरा नाम नाग भी है। यानि नाग जीवन सुरक्षा व अन्न व पानी की देवी थी। ये प्रजनन की देवी भी है लेकिन वो पुर्नजनम की देवी भी है क्योंकि वो केंचुली उतार कर नये जीवन को प्राप्त करने की महारत रखती है। जाट नाग को ही कहा गया इसका प्रमाण मुझे मिश्र से मिला। ''''मिश्र में वड जाट देवी थी जो कोबरा नाग के रूप में दिखाई गई और वो मिश्र की सुरक्षा व ऐकता , सम्पन्नता की देवी थी। ''''[25] जाट समूह का नाम कोबरा नाग पर है और ये समूह अन्न संग्राहक काल में बन गया था। प्रमाण न0 24 पर जिस जिट हारा का नाम आया है इसी नाम का वर्णन प्रसिद्ध भारतिय गणीत शास्त्री वराहमिहर अपनी किताब ब्रहत संहिता में भी करते हैं ''''6 ठी सदी

के भारतिय खगोल वैज्ञानिक वराह मिहिर 3 प्राचीन कबिलों का वर्णन करते हैं जाट हारा जाट सूरा और जाट धाडी''''''[26] ''''''F.S. Growse अनुसार जाट हारा ही बाद में जाट कहे गये।''''''[27]

यानि कुल मतलब ये है कि जाट समूह अन्न संग्राहक काल में बनना शुरू हुआ और ताम्र युग के राजतन्त्रवाद के काल में ये समूह केवल पुरूष ही पुरूषसतात्मक बना और उसकी नारी आज भी मातृसतात्मक है।

जाट शब्द के मूल———Nostratic Dictionary में Word N0 659_a Geor=Grain , Word No 90 ?at=women, 2656 Zoa=To grow/to bear, जाट बोली मे Geor=हरियाणा मे हाली किसान का खेत मे ले जाया खाना और बैलों के चारे के लिये इकठा शब्द है ''जवारा''। ?at=औरत , Zoa=बीज का जामणा और बच्चा जामणा। ये ही अर्थ नोस्टरेअिक शब्दकोश में दिया गया है।

Geor+?at=Geort=गुर्ट/गुर्त , जोर्ट यानि वे औरत जो अन्न के दाणे चुगती थी।

Zoa+?at= जोट/जाट वे औरत जो खेती करती थी और स्थाई रूप से बस कर वंश चलाती थी।

इरानी , इराकी व टर्कीश कुर्द अपने को गुटी का वंशज बताते है। वैसे भी Aggulative Language G=J, K=G=Q , S=Z, T=D होता है। ''''कुर्द की कुरमान जी भाषा की डिक्शनरी में जाट का मतलब है हल और जोट का मतलब होता है हाली यानि किसान।''''''[28]

2008 मे कैम्ब्रीज युनिवर्सीटी के आर्केलोजीकल विभाग ने नोसटरेटिक डिक्शनरी प्रकाशित की। दरअसल एक तरह से ये शब्दकोंश उन शब्दों को देता है जो नियोलिथिक काल मे थे या उससे पहले थे व ताम्रकाल के शुरू मे थे। फरटाइल क्रीसेंट से कई बोली फैली। लेकिन अहरान डोगलोपोलोस्की कहीं भी जाटकी बोली का वर्णन नही करता लेकिन मैंने जब इसे पढा तो मैं हैरान हो गया क्योंकि हरियाणा मे बोली जाने वाली जाटकी के शब्द इस शब्दकोश में भारी तादाद में हैं। ये इस बात का प्रमाण है कि जाटों का फैलाव जाग्रोस व टोरस पहाड से होना शुरू हुआ और ये पूर्वी इरान व अफगानिस्तान के रास्ते व पश्चिमी इरान से समुंद्र के साथ साथ सिन्धू पर आये। आगे नोस्टरेटिक के शब्द व उनके अर्थ दिये गये हैं लेकिन मैंने उनकी तुलना जाट बोली से की है।——

Nostratic	Meaning	Jatki	Nostratic	Meaning	Jatki
Shahaka	to get	साहा/शादी	H/wer	male person	बर
Bur	old man	बूढा व बडा	Ti	women	ताई
Aba	father	बाबू , अब्बू	Nom	gentle	नरम स्वभाव का
Nehra	steam	नहर	Aga	elder person	अगाडी/अगाणी

Naht help , to seek नाते रिश्तेदार Tomhu wall छत रोकने का थाम्ब

Ger house घर Ibar fig tree बड

Cp roof छप्पर/घर छापणा 3u3u teats चूची

?ay female marker जाटणी आये कह कर बोलती हैं Emum mother ऐ मां

Gam together गाम Mael beautiful lady माल

Bah to bind ब्याह Mahl young man माल्लह

Ben younger sister बहाण Sage to get सगाई

?ar family member जाट आरै कहते हैं

Nostratic	Jatki	Nostratic	Jatki	Nostratic	Jatki
Koid/Kirwa	कीडा/कीडी	Gaved/cow	गावडी	Luwar	लबाड/मोटा आदमी
Kayw/to eat	खाय	kahlulu/skin	खाल	gut/where	कित/कठ/कित्थों
Kabban	कांपणा	kte/altogether	कटठे	kinrey	किंघ्हे/कहां
Kstro	कतरना	Kaddu/earthen ware	कडाह, कढावणी		
Kutal/house	कोठा ,कुटी	kito/murder	काटणा	Kutkut/veil	घुंघट
Gabate/to go inwater			घाट	skudd /to end	कूडा
Obba	औबरा/कमरा	Dugu /foot step	डंग	udder	औडी/ दूध की थैली
Uro/come	उरा	illo/ilu/house	हेल्ली	hael/plough	हल
Aksyn	सान्नी/कटा चारा	Capp, Capela,	कोंपल	Curi/round	चूडी
Dhal, Tul	धूल/रेत का थल	Zappo/to catch	झप्पी भरना	Dibba/mound	टिबा
Zunka/bend	झुकना	Zone , Zwine/young	जवान	Sungo/listen	सुनो

Zinzine/ sound झुनझुना zehnd/sleep नींद zelan/burn जलाना

Zadiqai/careless जिद्धी, काईयां sanka/branch शांख zimo/feasting जिमणा

Surtd,swordo,sorde /dirty सूरडा sirlga/cool सील्हा,सीलक

Surdh/to pull सूतंणा cuyrd/sour खाटटा sras/square चौरस

Shaylam/wife's brother सालाहा saurak सोहरा ,सुसरा zirw ,zirgu/root जड

Sopio/sleep सोया kodah/liquid काढा Kuijt, kt खुंटी

Gogat/neck घीटी koliya/to fight कोली मारना klolo/coal कोल्ला

Kere/hard करडा kame(ni) कमी/नुक्सान रहना kuto/shirt कुडता

Koyar, Qwar/brown गौरा kasudh/hard कसूता mudd,mut/dead मुर्दा''[29]

प्रसिद्ध वैज्ञानिक इतिहासकार Renfrew अनुसार नोस्टरेटिक भाषा एक काल्पनिक नाम है लेकिन ये इस बात की पुष्टि करता है कि बडे भाषाई परिवार एक केन्द्र से फैले।

ये केन्द्र fertile Crescent था जो मेडेटेरियन क्षेत्र , आज की टर्की ,आरमिनिया ,कैस्पीयन सागर एरिया ,जाग्रोस पहाड क्षेत्र व उतरी इरान में था । इसलिये मैंने इस पेपर में एंफरोएशियाटिक , हैमिटो सैमिटिक , इंडो युरोपियन , द्रविड ,दहलो ,चाडिक ,बरबर , ओमाटिक आदि का अलग से सिन्धू सभ्यता के किसानों की बोली से मिलाण नही दिखाया । क्योंकि एक तो इसकी जरूरत नही रह गई कारण ये है कि नोस्टरेटिक डिक्शनरी खुद ये काम करती है। दूसरा ये पेपर काफी लम्बा हो जाता। लेकिन शब्दों का उपरोक्त प्रमाण ये बताता है कि गेहूं बोने खाने वाले सिन्धू पर आये किसान का उतर ,पश्चिमी ,उतर पूर्वी इरान और, दक्षिणी अन्नाटोलिया से ताल्लुक है। उनकी भाषा एक तरफ दक्षिणी पश्चिमी युरोपीयन , दूसरी तरफ तमील और तीसरी तरफ अफ्रीकन से मिलती है। इसलिये मैं कह सकता हूं कि सिन्धू सभ्यता का किसान जो जाट था वो सीधे बालों वाले इथोपीयन , दक्षिणी पश्चिमी युरोपीयन के वंशज हैं।

Notes—

1—Material & Culture by Noam Agmon , Hebrew University Jerusalem, Published in Brill, Affroasiatic Journal 2 (2000).

2—Extracts from District & States Gazetteers of The Panjab/Pakistan by Research Society of Pakistan, Vol-1, PP from below 90,91, Chapter –Dera Gazi Khan.

3—Ibid, Vol-ii , Chapter Multan , PP from below-82.

4—Science Magzine, Vol-294 , November 2001.

5—Reconstruction of History of Harrapan Civilization by M.N. Vahia & Nisha Yadav.

6—History of Civilization of Central Asia, Vol-1, UNESCO Publishing.

7—Early Agricultural Societies : Feasting in Southern Levants in PPNA By Catheryn .C.

Twiss, Journal of Archaeology. Please Search on google.

8—Census Of India 1901 , Vol-v , Balochistan , Part-1 Report , Published at Times of India Press Bombay/Mumbai.

9—Rigved Bhashyam, Bhashyakar Pandit Harisaran Sidhantlankar , Published by Ghudmal Parladkumar, Arya Dharmarth Niyal , Hindon City , Rajasthan.

10—Paul 1998:pp-70 , 'The Kurd by Thomas Bois Translated by M.W.M.Wellund , Berut 1996. Search on google.

11—History of Civilization of Central Asia , Vol-1 ,UNESCO Publishing.

12—Kurdistan By Ahmad Kozad Mohammad , Doctoral Thesis Submitted in University of Lieden.

13—Vander Veen in East Tribal Societies Edited by S.Zuchman , Chicago University Press 2009 , PP105-106.

14—Prachin Bharat Mei Yokdhay Ganraj by Yoganand Shatri , Darshan Acharya , Ved Vachaspati , Phd and Scholar of Khrosthi and Indogreek , Ex Reader in Delhi University and Ex Minister in Delhi Govt. Published by Published by Prachin Bhartiya Itihas Shodh Parishad 119 Goutam Nagar , New Delhi.PP-32

15—Cambridge Ancient History Edi. By Edward and Gadd ,Edition-3 , Vol-1, Pat-2.

16—Ibid, 8, 111.26-149.

17—New King of Susa & Anshan by Danishmand , Wolfen College , University of Oxford , Digital Library 2015-001. Please Search on google.

18—A Review of Religion , Political and Social Structure of Elam By Mohammad Taghi Fazli & Mohammad Reza Masih Rad , Islamic Azad University Suster , Iran . Published by www.waliaj .com

19—Ran Zadok: The Elamite Omosticon , University of Napoli.

20—The Archaeology of Elam..Ancient Iranean States by D.T.Potts, Cambridge University Press.

21—Marry Boyce Lieden 1975, Cambidge History of Iran edited by Michael Stranbery , Stuatgart 2002 .All Cited in Ancient Religion Edited by Sara Lees , Johnson University , ISBN 13:978-0-674-02548-6

22—Religion of Ancient Iran by J.DGuliman , Originally Published in French.

23—The Cambridge History of Judaism , Vol-1 Edited by W.D.Davies and L.Finklestien.

24—Sacred Landscape of Hitties and Luwians Edited by Anacleto d' Ayosina, Search on google.

25—Serpent Symbol of Salvation in Ancient Hear East by Andrew Skinner, Brimigham University.

26—Varah Mihira :Brihat Sahinta Edited by Sudhakar Dwevedi PP—239 ,289 , Alberuni: Kitab Tahqiq Mali-i-Hind Tr by Sachou Cited in 'The Jat of Panjab and Sind' Paper by Dr. S.Jabir Raza AMU, Published in The Jats Published by Originals Delhi.

27—Dr S.Jabir Raza…Ibid.

28—Grammer of Kurmanji , Kurdish Language By E.B.Sonae , Published by Lucas & Co , London.

29—Nostratic Dictionary by Ahron Dolgopolsky , Published by McDonald Institute for Archaeology, University of Cambridge, UK, 2008.